

# भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2010

समय : 3 घन्टे

प्रश्न पत्र-V

कुल अंक : 50

नोट :- कुल पांच प्रश्नों का उत्तर दें। हर एक भाग में से अनिवार्य प्रश्नों के अलावा कम से कम एक प्रश्न का उत्तर देते हुए शेष तीन प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्न 1 और 6 अनिवार्य है। सब प्रश्नों का अंक समान है। भाग एक का उत्तर जैमिनीय आधार पर एवं भाग दो पराशरी सिद्धांत के अनुसार उत्तर देना है।

## भाग-I (जैमिनी ज्योतिष)

1. श्री श्री रविशंकर जी की कुण्डली नीचे दी गई है :-  
13.5.1956, 5:45 प्रातः, पापनसम, तंजौर (तमिलनाडु)  
शेष दशा - मंगल 2व 2मा 26दि  
लग्न-मेष 26:29, सूर्य-मेष 28:57, चन्द्र-मिथुन 2:14, मंगल-मकर 24:16  
बुध-वृषभ 15:31, गुरु-कर्क 29:12, शुक्र-मिथुन 09:49,  
शनि(व)-वृश्चिक 06:49, राहु-वृश्चिक 14:53, केतु-वृषभ 14:53  
(क) चर दशा की गणना करें।  
(ख) जैमिनी नियमों के अनुसार उनके कार्य क्षेत्र पर प्रकाश डालें।
2. निम्न का फलादेश में उपयोग समझाएं :-  
(क) अमात्य कारक (ख) अर्गला (ग) आरुढ़ लग्न
3. निम्न कथन सत्य है अथवा असत्य :-  
i) सभी चर राशियां अपने से दूसरे को छोड़, सभी स्थिर राशियों पर दृष्टि डालती हैं।  
ii) जैमिनी के अनुसार मंगल सौतेली माँ को दर्शाता है।  
iii) अष्टमेश तथा द्वादशेश में जो बली हो वही रुद्र होता है।  
iv) स्थिर राशि चर राशि से अधिक बली होती है।  
v) यदि कारकांश लग्न से द्वितीय भाव में शुक्र स्थित हो तो जातक राजदूत बन सकता है।  
vi) नवांश में आत्मकारक से द्वितीय भाव में सूर्य और राहु शुभ ग्रहों से दृष्ट होने पर जातक चिकित्सक बनता है।  
vii) यदि शनि लग्न अथवा कारकांश अथवा चन्द्र लग्न में स्थित हो तो आयुर्दय में एक कक्षा कम कर दी जाती है।  
viii) यदि लग्न एवं सप्तम भाव शुभ करतरी में हो तो आयुर्दय में एक कक्षा बढ़ा देते हैं।  
ix) कारकांश लग्न से द्वितीय एवम् अष्टम भाव में समान अशुभ ग्रह केमदुम योग बनाते हैं।  
x) यदि बृहस्पति मीन राशि में हो तो स्थिर दशा नौ वर्ष की होती है।
4. दाराकारक, दारापद और उपपद का फलादेश में क्या योगदान है समझाएं।
5. जैमिनी पद्धति व पराशरी पद्धति में अंतर बताएं?

## भाग-II (विवाह एवं मेलापक)

6. निम्न कुण्डलियों का मिलान करें।  
पुरुष 10.8.1981, 00:07 घंटे, मुम्बई शनि 2व 5मा 14दि.

क्रमांक	ग्रह	राशि	डिग्री	मिनट
01	लग्न	मेष	25	16
02	सूर्य	कर्क	23	28
03	चंद्रमा	वृश्चिक	14	56
04	मंगल	मिथुन	21	20
05	बुध	कर्क	22	58
06	बृहस्पति	कन्या	13	58
07	शुक्र	सिंह	25	53
08	शनि	कन्या	12	45
09	राहु	कर्क	08	01
10	केतु	मकर	08	01

महिला 28.1.1984, 16 घंटे 52 मिनट, दिल्ली, बुध 8व 4मा 11दि.

क्रमांक	ग्रह	राशि	डिग्री	मिनट
01	लग्न	कर्क	01	20
02	सूर्य	मकर	14	06
03	चन्द्रमा	वृश्चिक	23	26
04	मंगल	तुला	14	57
05	बुध	धनु	20	33
06	बृहस्पति	धनु	08	14
07	शुक्र	धनु	09	40
08	शनि	तुला	22	07
09	राहु	वृषभ	21	07
10	केतु	वृश्चिक	21	07

7. वैवाहिक असमानता के 5 योग लिखें। क्या योग निम्न कुण्डली में उपस्थित हैं? चर्चा करें।

जन्म : 8.6.1957, 2:48 घण्टे, मुम्बई, मंगल - 4व 10मा 27दि.

लग्न-मीन 29:52, सूर्य 23:33 और बुध 00:15 वृषभ में,

चन्द्रमा 27:21, कन्या में, मंगल 28:12 और शुक्र 07:57 मिथुन में, गुरु 29:09

सिंह में, शनि(व) 17:17 वृश्चिक में, राहु 26:13 तुला में और केतु 26:13 मेष में।

8. (क) एक से अधिक विवाह के कोई 5 योग लिखें।

(ख) क्या निम्न कुण्डली में बहु विवाह के योग उपस्थित है?

पुरुष 29.7.1959, 2:45, मुम्बई, शुक्र 1व 4मा 1दि.

क्रमांक	ग्रह	राशि	डिग्री	मिनट
01	लग्न	वृषभ	23	29
02	सूर्य	कर्क	11	49
03	चंद्र	मेष	25	46
04	मंगल	सिंह	11	56
05	बुध(व)	कर्क	24	35
06	गुरु	तुला	28	56
07	शुक्र	सिंह	19	50
08	शनि(व)	धनु	08	16
09	राहु	कन्या	12	49
10	केतु	मीन	12	49

9. (क) दशा संधि मेलापक में किस प्रकार से महत्वपूर्ण है समझाए?

(ख) क्या विवाह में तीन ज्येष्ठों का इकट्ठा होना संभव है। चर्चा करें।

(ग) क्या आप समान नक्षत्र वाले जातक यदि राशियां भिन्न हैं तो मेलापक करेंगे?

10. निम्न सत्य हैं या असत्य

i) विवाह कम आयु में हो सकता है यदि शुभ ग्रह सप्तमेश से निकटतम शुभ भाव में उपस्थित हो।

ii) उपचय राशि में यदि शुक्र एवं सप्तमेश साथ-साथ है तो विवाह उपरान्त सम्पन्नता होगी।

iii) यदि मंगल चतुर्थ भाव में शुक्र की राशि में हो तो मंगल दोष समाप्त हो जाता है।

iv) यदि जन्म राशि के नाथ एक ही हो अथवा मित्र हो तो नाडी दोष नजरदाज किया जा सकता है।

v) यदि अष्टमेश अपने नवांश में हो व अष्टम भाव में अशुभ ग्रह हो तो विधवा होने की सम्भावना होती है।

vi) यदि बृहस्पति सप्तम में बिना किसी अशुभ प्रभाव से उपस्थित हो तो साथी उत्तम सदाचारी होता है।

vii) यदि शुक्र व एकादशेश लग्न में हो तो विवाह अवश्य होता है।

viii) यदि चन्द्रमा शुष्क राशि में हो तो विवाह में विलम्ब हो सकता है।

ix) सप्तमेश व शुक्र यदि बजर राशि में हो तो विवाह नहीं होता है।

x) यदि शनि सप्तम में तुला राशि में हो तो वैवाहिक जीवन सुखद होता है।